महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा से पी-एच. डी. (हिन्दी) को उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध की रुपरेखा

शोध का शीषक

"गुजरात के भवाई लोकनृत्य के सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन"

अनुसंधित्सु
पढियार पिनल डाहयाभाई
शोध-छात्रा
हिन्दी विभाग, कला संकाय,
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय,
बड़ौदा

निदशिका
डॉ. कल्पना गवली
प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, कला संकाय,
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय,
बड़ौदा

नामांकन संख्या : FOA /1392

दिनांक : 19-05-2015

हिन्दी विभाग, कला संकाय,

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय,

बड़ौदा

वष – 2023

Executive summary of the Ph.D. Thesis

Table of contents of methodology, the key findings, conclusions and recommendations / suggestions etc. along with the title, bibliography and webliography.

Table of contents of methodology : (शोध निबंध के अनुसार अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

अध्याय	पृष्ठ संख्या
अध्याय 1. भारत के प्रमुख लोक नाट्य के प्रकार ● लोक साहित्य का परिचय ● 'लोक' शब्द को व्युत्पत्ति ● "लोक" शब्द को परिभाषा ● साहित्य ● लोक साहित्य ● लोक साहित्य को परिभाषा और स्वरूप ● लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य म अंतर ● लोक साहित्य और साहित्य का परस्पर संबंध तथा तुलनात्मक अध्ययन **भारत म लोक साहित्य को परंपरा** ➢ लोक-संस्कृति तथा लोक साहित्य को पृथक सत्ता : ➢ लोक साहित्य का समान्य परिचय ➢ भारतीय लोकसाहित्य का सामान्य परिचय ➢ भारत के प्रमुख लोक नाट्य निम्नलिखित है। ➢ लोक नाट्य **निष्कष**	1-17
संदभ	17-34
अध्याय 2: गुजरात के प्रमुख लोक साहित्य का प्रकार	35
❖ **गुजरात के लोक साहित्य का समान्य परिचय**	36-38
❖ गुजरात के लोक साहित्य के प्रकार ■ लोक गीत ■ लोक नाट्य आख्यान ■ लोक नाट्य ■ लोक नृत्यों ■ लोक कथा ■ लोक कला ■ लोक सुभाषित **निष्कष**	39-127

संदभ	
अध्याय 3. भवाई लोक नाट्य का सामान्य पर्रिचय	
⟹ भवाई का अथ	
⟹ भवाई के उदद्भव को कथा	
⟹ त्रागाड़ा भवैया को जात	128
⟹ भवाई संग्रह को आवृति	129-133
⟹ लोक नाट्य भवाई वेशा एवं प्रकार	
भवाई के वेषा के वगिकरण	
❖ पारंपरिक भवाई	
❖ आधुनिक भवाई	
भवाई नाट्य अन्य प्रदेश के नाट्य से साम्यता	
भवाई के वाद्य	
निष्कष	134-152
संदभ	
अध्याय 4 : भवाई लोक नाट्य का सामाजिक अध्ययन	
➢ पूवभूमिका	
➢ भवाई म पारंपरिक सामाजिक वेश	
निष्कष	
संदभ	
अध्याय 5 : भवाई लोकनाट्य का सांस्कृतिक अध्ययन	
❖ लोक नाट्य भवाई नृत्य प्रधान	
❖ रंगभूषा	152-159
❖ वेशभूषा	
❖ प्रकाश	
❖ भवाई के वाद्य और यंत्र	
❖ भूंगल का शेक	159-160
❖ भृंगळ बजाने के नियम	160-162
❖ मान	163
❖ मान देने के नियम	
❖ भवाई के गीत गाने के लिए नहीं, खेलने के लिए होते ह	

❖ भवाई का संगीत मुक्त है	164-166
❖ भवाई म विशेष राग को विशेष ताल म गाने को प्रथा है	
❖ मात्रा का उपयोग कैसे होता है ?	167-176
❖ भवाई का थेई थेई (थेईकारा)	
❖ थप्पा	
❖ भवाई म प्रयुक्त प्रमुख ताल-बोल इत्यादि	
❖ भवाई का संगीत नृत्त एवं नृत्य प्रधान	
❖ भवाई म लोक संगीत तथा देशी संगीत	177
❖ स्वयं के ताल	178-179
❖ गरबी विलंबित लय म	
❖ नतन को पृष्ठभूमि म व्यक्तिगत तथा विस्तृत मानसिक भूमिका	
❖ काकड़ा और नतन	180-213
❖ जटिलता का आभास	
❖ विविध प्रकार को नाचणी इत्यादि	
❖ नतन को पद-गतियाँ (पैर को चाल)	
❖ मौलिक मंच परंपराएँ	
❖ नट के साथ सामाजिकों को सहानुभूति	
❖ चित्र प्रेम स्टेज को अपेक्षा भवाई का स्वरूप किस तरह पृथक होता है ?	
❖ अभिनय	
❖ तालीम देने को पद्धति	
❖ भवाई लोक सांस्कृति से लोक से जुड़ना	
निष्कष	
संदभ	
अध्याय : 6 भवाई कलाकारो से साक्षात्कार करना	214 215-217
➢ भवाई कलाकार को तस्वीर	218

➢ सी.डी. मे भवाई कलाकार के वीडियो एवं ऑडियो	
उपसंहार	219-221
परिशिष्ट	222-226

The key findings, conclusions and recommendations/ suggestions etc. along with the title, bibliography and webliography (शोध प्रारूप, उपसंहार एवं विषय शीर्षक संदर्भ ग्रंथ सूची)

प्राक्कथन

पर्रिवतन प्रकृति का अनिवायता है। इससे कोई बच नहों सकता। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जिस तत्व म किसी-न-किसी रूप म गतिशीलता बनी रही, अनेकानेक गतिरोधों के बावजूद अंतत: किसी -न-किसी अंश म उसका अस्तित्व विद्यमान रहा। आचाय हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का मानना है कि समाज म गतिशीलता का बना रहना अच्छा है। प्रवाह सवत्र शोध-शक्ति का काम करता है- नदी म भी, जीवन म भी, साहित्य म भी। साहित्य जो समाज का दपण माना जाता ह। लोक साहित्य समाज के लोगों द्वारा रचा गया है। साहित्य म एक साहित्यक रचना होती है वह है लोक साहित्य। लोक साहित्य वह जो लोगों द्वारा रचा गया साहित्य है। लोक साहित्य को रचना का कोई लेखक नहों होता ह। वह साहित्य समाज के सभी लोग द्वारा रचा जाता ह।

लोक साहित्य के अंतगत म भी रचनाएं होती है, जैसे को लोक कथा, लोक गाथा, लोक नाट्य, लोक नृत्य, लोक गीत, सुभाषितों का समावेश होता है। लोक साहित्य को रचना केवल एक या दो सदियों से नहों होती ह उनका उद्भव लोगों के साथ हआ ह। लोक साहित्य शिष्ट साहित्य के रूप म नहों होता है। वह तो मौखिक साहित्य होता ह। एक इंसान कोई गीत गाए तो बाकि के लोग भी वह गीत को गाते ह और यहों परंपरा सदीयों तक चली रहती ह। यह रचना को लोक साहित्य माना जाता ह।

लोक साहित्य का संकलन भी अभी अभी शुरू किया ह। भारतीय लोक साहित्य का इतिहास बहत ही बृहद रूप म मीलता ह। भारत के अलग- अलग राज्यों के अपनी एक अलग लोक संस्कृति एवं लोक साहित्य ह। भारत म लोक साहित्य पर बहत सारे लेखकों ने काम किया ह, जिन्ह म बापुराव देसाई, श्याम परमार, सत्यद्र, कृष्णदेव उपाध्याय आदी लेखकों का संकलन हम मीलता है। भारत म सभी राज्यों के अपने अपने लोक साहित्य का एक अलग ही इतिहास ह।

भारत म गुजरात राज्य का अपना बृहत रूप म लोक साहित्य का संकलन एवं इतिहास मीलता ह। गुजरात प्रदेश म सौराष्ट्र को लोक साहित्य को मातृभूमि माना जाता ह। गुजरात के लोक साहित्यकार म झवेरचंद मेघाणी जी को लोकसाहित्य का पिता माना जाता ह। उनके अलावा जयमल्ल परमार, बळंवत जानी, हसु याज्ञिक, कृष्णकांत कड़किया आदि का भी महत्वपूण योगादान ह। गुजरात के लोक गीतों का प्रचार इतना हवा ह को कही सारे हिंदी फिल्मी गीतों भी उसका प्रयोग हआ ह। जैसे को "महेदी ते वावी मडंवे ने ऐनो रंग गयो गुजरात रे महेदी रंग लाग्यो", "लीली लेमडी रे लीलो नागरवेल नो छोड" आदी का प्रयोग हमे देखने को मीलता है। गुजरात का लोक गीत के साथ साथ उसका लोक नृत्य भी बहत प्रचलित है। गुजरात का लोकनृत्य गरबा विश्व विख्यात है।

आज भी गुजरात को नवरात्री को बहत ही विशेष रूप म मनाया जाता ह। गरबा का प्रयोग भी केवल एक गुजराती नही करता अपितु विश्व म रहने वाले सभी लोग को गरबा पसंद आता ह। आज विदेशों मे भी गरबा का भी विशेष रूप से मनाया जाता है।

गुजरात के लोक साहित्य म लोक कथा एवं लोक गाथा भी प्रचुर मात्रा म मीलती है। लोक कथा म हमे जेसल तोरल को कथा तो साथ म राजा महाराजा को भी कथा मीलती है। लोक गाथा का भी विशेष रूप से मीलता ह। लोक डायरा का भी गुजरात के लोक सहित्य म एक महत्वपूण रूप से मीलता है। गुजरात के डायरा म हम वीरों को गाथा का एवंम ऐतिहासिक रचनाओं का गान के साथ लोगों को मनोरंजन करते है। लोक साहित्य को एक रचना अख्यान भी हम मीलता है। अख्यान म रामापीर, भाथीजी, का होता है, उनम उनके बालकांड से लेके जो वीरों ने श्रेष्ठ काम किये है उनका गाने के माध्यम से लोगों को बाताते ह। आख्यान म दोहों का गान होता है साथ मे वह एक वाता के रूप म प्रस्तुत किया जाता है। अख्यान ज्यादत्तर मंदिर के प्रागण मे होते ह। लोक साहित्य म कहावतों का भी महत्व दिया गया है। गुजराती कहावते का उपयोग कही सारी जगाहों पर होता है।

गुजरात का लोक साहित्य का स्वरूप बहत ही बृहद है। गुजरात का लोक नाट्य भवाई का एक अलग ही स्थान रहा है। आज भी भवाई हम देखने को मिलती है। भवाई को चचा म अपने शोध ग्रंथ म विस्तार से प्रस्तुत किया है।

अपने शोध काय को छ अध्याय म विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय म भारत के प्रमुख लोक नाट्य का पारिचय दिया है। उसके साथ साथ लोक शब्द, लोक साहित्य को व्याख्या जो विद्वानों ने को है उसका भी पारिचय दिया है। उसके साथ साथ लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य का अंतर भी बताया है। लोक साहित्य म भारत के जो प्रमुख राज्य के लोक नाट्य का विस्तार पूवक पारिचय दिया है। लोक नाट्य अलग अलग राज्य के होकर भी वह कही न कही साम्य है। उनको मुख्य उद्देश्य लोक के प्रति जागृति लाना एवं अपनी परंपरा को पेढ़ी दर पेढ़ी तक फेलना है। हर एक नाट्य म मुख्य रूप से समाज के कल्याण को ही बात आती है। उसके साथ साथ हमारे वेश भूषा को महत्व दिया है। परंपरा को यही लोक नाट्य ने जिंदा रखा है।

द्वितीय अध्याय म गुजरात के लोक साहित्य के विकास का विस्तार से प्रस्तुत किया है। गुजरात को लोक वाता, लोक कथा, लोक गाथा, लोक नृत्य, लोकगीत, लोक आख्यायन , लोक सुभाषितों का विस्तार से प्रस्तुत किया है। गुजरात के लोग पहेले से ही धामिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से जुड़े हए है। लोक गीत म

लोक को भावना के साथ साथ अपने मन को प्रफुल्लित करते लोक गीत के साथ-साथ लोक कथा का जो रसात्मक रूप से उपदेश देती सामाजिक कथाओं का वणन किया है। लोक नाट्य भवाई मुख्य नाट्य के साथ गौण नाट्य का उद्भव और समाज से उनका जुड़ाव का सामाजिक काय का विस्तार से परिचय दिया है। लोक आख्यायन जिसम पौराणिक कथा से आज को समस्याओं का वणन किया है। लोक शुभाषितों को गुजराती म कहावत के नाम से जाने जाते है। यहा पर हर एक बात पे कहावत मिल जाती है। उनका उपदेश छोटी बात म मिल जाता है।

तीसरे अध्याय म लोक नाट्य भवाई का समान्य रूप से परिचय दिया है। भवाई का इतिहास बहत ही बृहद माना जाता है। असाइत जी ने जिस तरह से भवाई को रचना को उसका भी निरूपण दिया गया है। भवाई के स्वरूप जो वेश के मध्यम से होते है अगर भवाई म वेश नहों होता तो भवाई का कोई अथ ही नहों होता है। भवाई एक सामाजिक लोक नाट्य का मध्यम ही माना जाता है। उसके अतिरेक भवाई म भी कही सारे वेश आते है वह हमारे धम से जुड़े होते है। भवाई को दो भागों म विभाजित करके पारंपारिक एवं आधुनिक भवाई को चचा करते उसम उपयोग होते वाद्य को भी चचा को है। भवाई गुजरात के साथ साथ उसका समान स्वरूप भी हम अन्य लोक नाट्य म मिल जाता है उसको थोड़ी सी चचा को है।

चौथे अध्याय म समाज म जो कु- रिवाजो चल रहे है उसे सही रूप से नाटक के मध्यम से भवाई कलाकार ने लाए है। वह समय था जब कोई दृश्य का मध्यम नहों था उसी समय असाइत ने यह वेषों को रचना करके समाज जो उझागर करने को कोशिश को है। समाज म आज भी वह रिवाजो कही ना कही हम देखने को मिल जाता है। आज भी भवाई के यह वेश हमे उतने ही महत्व रूप से उपयोग होते रहे है। यह नाट्य एक सामाजिक के ऊपर ही अधिक प्रयास किया गया है।

अंतिम अध्याय म भवाई सांस्कृति को धरोहर है और भवाई के कुछ अपने नियम के वही विस्तार रूप से बताया है। भवाई म भूगल वाद्य का जो महत्व है उसके जो नियम है, भवाई कलाकार के अपने जो नियम है वह विस्तार पूवक बताया गया है। भवाई म भूगल से जो मान देते है उनका भी विस्तार से चचा करते किस तरह भवाई लेखित नाटक से अलग होके अपनी मौलिकता को अपने संवाद से प्रेक्षको को अनादित करता है। भवाई एक नाट्य होकर भी समाज म हम से किस तरह से जुड़ा है उसका विस्तार से वणन किया है।

अध्याय छ म भवाई कलाकारो से साक्षात्कार किए और उनसे जो बात चित हए वह एक वीडियो एवं ओड़ियों म एक सी.डी के साथ रखा है। उसके साथ फोटो का भी टंकण किया है।

इस शोध ग्रंथ म भवाई म समाज को ध्यान म रखते हए उनका ही महत्व दिया है। भवाई म लोकनाट्य म प्रचलित हए साथ म एक ज्ञान का साधन बनकर भी आइ है। भवाई म जो वाजिंत्र होते ह उनका भी एक अलग महत्व होता है। भवाई म प्रयोग होने वाली भाषा सामान्य भाषा होती है। सामान्य मनुष्य भी वह भाषा एवं भवाई म देने वाले संदेश को समज सके। भवाई के कलाकार जो होते है वही भवाई नाट्य को बात अपने जन भाषा म कहते है। भवाई नाट्य का कोई रचिता नहों होता है। भवाई के कलाकार अपने आप हि उस नाट्य को अपने हिसाब से करते है। भवाई को पहले ना कोई रंगभूमि मिली थी वह तो गांव गांव जा कर गांव के मुख्य द्वार पर ही सब गांव के लोगों को एकठा करके भवाई को दिखाते है। आज समय के साथ उसका रूप भी बदला ह। आज भवाई को एक रंगभूमि का स्थान दिया गया है। आधुनिक भवाई जो है वह केवल एक विषय को लेकर होती है जब कि पारंपारिक भवाई जो होती वह भवाई सभी वेशों को लेकर होती है । पारंपारिक भवाई रात भर चलती है। भवाई लोक नाट्य को अपने तरफ से हो सके उतना श्रेष्ठ बनाने को कोशीश कि है। भवाई म आगे भी शोध हो सकती है जैसे कि आधुनिक एवं पारंपारिक भवाई। भवाई के लुप्त हए वेशों के अंतगत हो सकता है। इस शोध ग्रंथ के अंत म संदभ ग्रंथों को सूची प्रस्तुत को गई है।

शोध विषय को प्रेरणा एवं विषय चयन:-

किसी भी शोध-काय को प्रेरक भाव-भूमि के रूप म मनुष्य को जिज्ञासावृति होती है। साहित्य म शोध -काय के पीछे यही जिज्ञासा कुछ नया देने को सोच जिम्मेदार है। किन्हों विशेष पारिस्थितियों म मनुष्य को जिज्ञासावृति एक निशिचत दिशा तय करने लगती है और शोध-काय का स्वरूप भी यहों से आकर ग्रहण करने लगता है। मेरे अनुसंधित्सु रूप को भूमिका के पीछे यही जिज्ञासावृति कारणरूप है।

मेरी मातृभाषा गुजराती है, लेकिन प्रांरभ से ही मेरी अभिरुचि हिंदी के प्रति रही है। हिंदी भाषा के प्रति विशेष लगाव होने के कारण मने हिंदी विषय लेकर एम.फिल तक अध्ययन किया। मने अपने जीवन म पढाई के प्रति विशेष करके हिंदी भाषा के प्रति मेरी रुचि रही ह। जब मने अनुस्तानक म संशोधन का विचार आया यह विचार मेरे प्रिय एवं गूरुजन प्रो. कल्पना गवली जी को बताया उन्होंने उसी समय मेरे विचार को प्रोत्साहित किया और उन्होंने मुझे एम.फिल करने को राह दिखाई। एम.फिल म उत्तरणी होने बाद संशोधन काय म यानी पीएच.डी म प्रवेश किया।

मेरी रुची नाटक के प्रत्ये ज्यादा थी। मेरे एम.फिल का लघुशोध ग्रंथ भी भीष्मसहानी कृत "कबीरा खड़ा बाजार म" नाटक के उपर काम किया था। पी-एच.डी म भी नाटक म रूची होने से मेरे गुरु प्रो. कल्पना गवली जी ने मुझे लोक साहित्य के अंतगत काय करने को कहा। मैडम ने बताया को अगर आपको रुची नाटक मे है तो आप लोक

साहित्य के उपर अपना शोध काय कर सकते है। यह विषय मेरे लिए नया था। लोक साहित्य को तो बचपन से जानते थे। बचपन म जब दादा-दादी, मां गीत गाती थी और वाता भी सुनाती थी इसलिए थोडा बहत तो लोक साहित्य को जानते थे, अपितु यह तो संशोधन का काय था इसलिए गहराई से जान ना बहत ही जरुरी था। एम.ए के दौरान मने लोक साहित्य को पढा था तब से रुची तो थी ही और अब यह काय करना था, मैडम ने मुजे यह काय करने के लिए लोक साहित्य को पुस्तक का पढ़ना जरुरी था। पुस्तकों पढने के बाद मैडम से लोक साहित्य पर चचा विचारणा हए। उसी समय मने भी मैडम को आज्ञा को अपना लक्ष्य बना लिया उसी समय हमारे विभाग म प्रो. शैलजा भारद्वाज थे उन्होंने मुझे मेरे विषय को लेकर जहां जहां त्रुटिया थी वह निकाल के मेरी रूप रेखा को सही रूप म लाया। पहले मेरे विषय म भारत के मुख्य चार राज्यों के लोक नाट्य लिए थे। तब उन्होंने और बाकि शिक्षक ने मिलकर मेरे संशोधन काय को सही रूप देने के लिए उन्होंने केवल गुजरात के प्रमुख लोक नाट्य भवाई को मेरे संशोधन का विषय बनाते हए शोध प्रबंध का शीषक रखा "गुजरात के लोकनाट्य भवाई के सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन" ।

शोध काय का उद्देश्य:

प्रत्येक काय के पीछे कोई उद्देश्य होता है। शोध जैसा कढिन काय तो बिना उद्देश्य के हो ही नहों सकता। मेरे इस शोध-काय के पीछे भी महत्वपूण उद्देश्य छीपा है, जो इस प्रकार है।-

१. लोक साहित्य को गहराई से मूल्यांकन करने का मेरा प्रयास रहा है।

२. लोक साहित्य म लोक नाट्य को लेकर गहन अध्यायन करके गुजरात के लोक नाट्य भवाई के उपर प्रकाश डाला।

३. इस शोध प्रबंध म गुजरात के लोक साहित्य तथा लोक नाटय भवाई का हिंदी भाषा म कोई शोध काय नहों हआ ह। अत: यह नया व मौलिक विषय है।

४ लोक नाट्य भवाई जो गुजरात का मुख्य लोक नाट्य है यह बात को लेकर इस शोध प्रबंध म उन पर सवागीय अध्ययन प्रस्तुत करने का मेरा प्रयास रहा है।

५. लोक नाट्य भवाई के माध्यम से सामाजिक रूप से समाज म रही कुप्रथा तथा समाजिक काय को महत्व देते है उन पर प्रकाश डाला है।

६. लोक नाट्य भवाई के माध्यम से सांस्कृतिक द्रष्टि से संस्कृति का जतन एवं उनको परख दिखना महत्वपूण प्रकाश डाला है।

७. लोक नाट्य भवाई जो आज लुप्त होती जा रही है हम उसे किस तरह से बचाएं यह बात को लेकर अपनी विचारों को प्रस्तुत किया है।

८. मेरा काय केवल शोध काय पूण करना नहीं है,मेरे शोध काय पूण होने से समाज तथा साहित्य को कुछ नया प्रदान हो यही मेरा लक्ष्य है।

उपसंहार:

अंत म उपसंहार के अंतगत समग्र शोध प्रबंध का सिंहावलोकन करते हए यह स्थापना को गई है कि लोक साहित्य म गुजरात का लोक साहित्य विकसित रूप से ह। गुजरात के लोक साहित्य म जो लोकनाट्य भवाई का एक अलग ही रूप ह । भवाई म समाज म होने वाले कुप्रथा एवं आधुनिक विषयों का विस्तार पूवक उपयोग किया जा रहा ह। भवाई पहले लोक मनोरंजन का साधन के रूप म थी पर समय के साथ उनका रूप भी बदल गया अब भवाई केवल एक नाट्य के रूप म मिलती ह।

प्रथम अध्याय म भारत के प्रमुख लोक नाट्य का पॉरचय दिया है। उसके साथ साथ लोक शब्द, लोक साहित्य को व्याख्या जो विद्वानों ने को है उसका भी पॉरचय दिया है। उसके साथ साथ लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य का अंतर भी बताया है। लोक साहित्य म भारत के जो प्रमुख राज्य के लोक नाट्य का विस्तार पूवक पॉरचय दिया है। लोक नाट्य अलग अलग राज्य के होकर भी वह कही न कही साम्य है। उनको मुखी उद्देश्य लोक के प्रति जागृति लाना एवं अपनी परंपरा को पेढ़ी दर पेढ़ी तक फेलना है। हर एक नाट्य म मुख्य रूप से समाज के कल्याण को ही बात आती है। उसके साथ साथ हमारे वेश भूषा को महत्व दिया है। परंपरा को यही लोक नाट्य ने जिंदा रखा है।

द्वितीय अध्याय म गुजरात के लोक साहित्य के विकास का विस्तार से प्रस्तुत किया है। गुजरात को लोक वाता, लोक कथा, लोक गाथ, लोक नृत्य, लोकगीत, लोक आख्यायन , लोक सुभाषितों का विस्तार से प्रस्तुत किया है। गुजरात के लोग पहेले से ही धामिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से जुड़ा हवा है। लोक गीत म लोक को भावना के साथ साथ अपने मन को प्रफुल्लित कराते लोक गीत के साथ-साथ लोक कथा जो रसात्मक रूप से उपदेश देती सामाजिक कथाओं का वणन किया है। लोक नाट्य भवाई मुख्य नाट्य के साथ गौण नाट्य का उद्भव और समाज से उनका जुड़ाव का सामाजिक काय का विस्तार से पॉरचय दिया है। लोक आख्यायन जिसम पौराणिक कथा से आज को समस्याओं का वणन किया है। लोक शुभाषितों को गुजराती म कहावत के नाम से जाने जाते है। यहा पर हर एक बात पे कहावत मिल जाती है। उनका उपदेश छोटी बात म मिल जाता है।

तीसरे अध्याय म लोक नाट्य भवाई का समान्य रूप से पॉरचय दिया है। भवाई का इतिहास बहत ही बृहद माना जाता है। असाइत जी ने जिस तरह से भवाई को रचना को उसका भी निरूपण दिया गया है। भवाई के स्वरूप

जो वेश के मध्यम से होते है अगर भवाई म वेश नहों होता तो भवाई का कोई अथ ही नहों होता है। भवाई एक सामाजिक लोक नाट्य का मध्यम ही माना जाता है। उसके अतिरेक भवाई म भी कही सारे वेश आते है वह हमारे धम से जुड़े होते है। भवाई को भागों म विभाजित करके पारंपरिक एवं आधुनिक भवाई को चचा कराते उसम उपयोग होते वाद्य को भी चचा का विषय बना है। भवाई गुजरात के साथ साथ उसका समान स्वरूप भी हम अन्य लोक नाट्य म मिल जाता है उसको थोड़ी सी चचा को है।

चौथे अध्याय म समाज म जो कु रिवाजो चल रहे है उसे सही रूप से नाटक के मध्यम से भवाई कलाकार ने लाए है। वह समय था जब कोई दृश्य का मध्यम नहों था उसी समय असाइत ने यह वेषों को रचना करके समाज जो उझागर करने को कोशिश को है। समाज म आज भी वह रिवाजो कही ना कही हम देखने को मिल जाता है। आज भी भवाई के यह वेश हमे उतने ही महत्व रूप से उपयोग होते रहे है। यह नाट्य एक सामाजिक के ऊपर ही अधिक प्रयास किया गया है।

अंतिम अध्याय म भवाई सांस्कृति को धरोहर है और भवाई के कुछ अपने नियम के वही विस्तार रूप से बताया है। भवाई म भूगल वाद्य का जो महत्व है उसके जो नियम है, भवाई कलाकार के अपने जो नियम है वह विस्तार पूवक बताया गया है। भवाई म भूगल से जो मान देते है उनका भी विस्तार से चचा करते किस तरह भवाई लेखित नाटक से अलग होके अपनी मौलिकता को अपने संवाद से प्रेक्षको को अनादित करता है। भवाई एक नाट्य होकर भी समाज म हम से किस तरह से जुड़ा है उसका विस्तार से वणन किया है।

भवाई म समाज को ध्यान म रखते हए उनका ही महत्व दिया है। भवाई म लोकनाट्य म प्रचलित हए साथ म एक ज्ञान का साधन बनकर भी आइ है। भवाई म जो वाजिंत्र होते ह उनका भी एक अलग महत्व होता है। भवाई म प्रयोग होने वाली भाषा सामान्य भाषा होती है। सामान्य मनुष्य भी वह भाषा एवं भवाई म देने वाले संदेश को समज सके। भवाई के कलाकार होते जो होते है वह भवाई को जो नाट्य को बात है तो उनका कोई रचिता नहों होता है। भवाई के कलाकार अपने आप हि उस नाट्य को अपने हिसाब से करते है। भवाई को पहले ना कोई रंगभूमि मिली थी वह तो गांव गांव जा कर गांव के मुख्य द्वार पर ही सब गांव के लोगों को एकठा करके भवाई को दिखाते है। आज समय के साथ उसका रूप भी बदला ह। आज भवाई को एक रंगभूमि का स्थान दिया गया है। आधुनिक भवाई जो है वह केवल एक विषय को लेकर होती है जब कि पारंपारिक भवाई जो होती वह भवाई सभी वेशों को लेकर होती है । पारंपारिक भवाई रात भर चलती है। भवाई लोक नाट्य को अपने तरफ से हो सके उतना

श्रेष्ठ बनाने को कोशीश कि है। भवाई म आगे भी शोध हो सकती है जैसे कि आधुनिक एवं पारंपारिक भवाई। भवाई के लुप्त हए वेशों के अंतगत हो सकता है। अंत म संदभ ग्रंथों को सूची प्रस्तुत को गई है।

<u>परिशिष्ट</u>

<u>संदभ- ग्रंथ-सूची</u>

१. सहायक ग्रंथ सूची:

क्रम	रचना का नाम	लेखक	प्रकाशन
१.	लोक साहित्य का अध्ययन	डॉ. त्रिलोचन पाण्डेय	लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद
२.	लोक साहित्य विज्ञान	डॉ. सत्यद्र	राजस्थानी ग्रंथाकार, जोधपुर
३.	लोक साहित्य को सांस्कृतिक परंपरा	डॉ. मनोहर शमा	डॉ. सत्यद्र रोशनलाल जैन एण्डं संस, जयपुर-३
०४	लोक साहित्य	डॉ. इंदु यादव	साहित्य रत्नालय, कानपूर, संस्करण-२००४
०५	हिंदी साहित्य का बृहत इतिहास भाग-१६	महापंडित राहल सांकृत्यायन, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय	नागरी प्रचारिणि सभा, काशी सं. २०१७ वि.
०६	भवाई स्वरूप अने लक्षणो	डॉ. कृष्णकांत ओ. काडकिया	महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा- १९९६
०७	भवाई: नट वतन अने संगीत	डॉ. कृष्णकांत ओ. काडकिया	युनिवसिटी ग्रंथनिमाण बोड, गुजरात राज्य अहमदावाद-१९९४
०८	लोकधर्मा नाट्य परम्परा	डॉ. श्यामं परमार	हिंदी प्रचारक पुस्तकालय
०९	लोकरंग उत्तरप्रदेश	दया प्रकाश सिन्हा	उ.प्र. [illegible], सांस्कृतिक कायविभाग, [illegible].प्र. [illegible], [illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	प्र[illegible], [illegible], प्र.[illegible] [illegible]द्वि.[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]. [illegible]	[illegible] प्र[illegible], [illegible].प्र.[illegible]

[illegible]	[illegible]: तत्त्वचचा	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] ग्रंथनिमाण बोड, [illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible] कांत कडकिया ट्रस्ट एम-[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	पार्श्व पब्लिकेशन निशापोळ, [illegible]

			[illegible], [illegible]- [illegible]
[illegible]	लोक साहित्य की भूमिका	[illegible]	[illegible], [illegible], [illegible], [illegible]- [illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	'[illegible]', [illegible]-[illegible]/[illegible], रूरल हाउसिंग बोड, [illegible], [illegible]-[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible], [illegible], [illegible]
24	[illegible], [illegible]	[illegible]	[illegible]

२ शब्द कोश:

[illegible]. [illegible]: [illegible]

[illegible]. [illegible]: [illegible]

[illegible]. [illegible]: [illegible]

[illegible]. [illegible]: [illegible]

[illegible]. [illegible]-कद्रीय हिंदी निदशालय, [illegible]

३. पत्र-पत्रिकाएं

[illegible]. [illegible]

[illegible]. [illegible]

[illegible]. [illegible]

[illegible]. [illegible]

४. इंटरनेट वेबसाईट्स

www. Google.com

www. bbchindi.com

www. hindiwikipedia.com

www. gujaratiloksahity.com

www. folkliteracher.com